सय्यिदिना अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ
की
हिकायात, तश्बीहात और अक़्वाल

मुरत्तिब
ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन
(अहले सुन्नत)

सय्यिदिना
अ़ली बिन अबी त़ालिब ﷺ
की हिकायात, तश्बीहात
और अक़्वाल

मुरत्तिब

ख़ुसरो क़ासिम

सहायक प्रवक्ता मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग

अ.मु.यु. अ़लीगढ़

रस्मुल ख़त हिन्दी

डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

किताब का नाम : *सय्यिदिना अ़ली बिन अबी त़ालिब ﷺ की हिकायात, तश्बीहात और अक़्वाल*

मुरत्तिब : ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी : डो. शेहज़ाद हुसैन क़ाज़ी

फाउन्डर एन्ड चेरमेन

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

सफहात : 28

सन इशाअत : मार्च, 2019 (13 रजब, हिजरी 1440)

कम्पोसिंग/प्रिंटिंग : ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता (अहले सुन्नत)

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

डो. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

Contact No : 85110 21786

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ ۝

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ ۝

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ﷻ के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नही है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल है। अल्लाह ﷻ का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुज़ से **"सय्यिदिना अ़ली बिन अबी तालिब رضي الله عنه की हिकायात, तश्बीहात और अक़वाल"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँखों के सामने एक अैसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमें नासबीयत और ख़ारजियत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अ़ली عليه السلام को कुछ फिर्कापरस्त लोगों ने खुद के मस्लक़ का अहम हिस्सा बना दिया है। अैसे हालात में अ़लीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के **Mechanical Engineering Department** के **Assistant Professor हज़रत खुसरो क़ासिम साहब**ने जिम्मा उठाया कि अैसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लक़े अह्ले सुन्नत में मुहब्बते अह्ले बैत عليهم السلام और मुहब्बते अ़ली عليه السلام ये शीअ़त नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बल्कि ये तो अह्ले सुन्नत का **1400** साल से चला आ रहा मज़बूत अक़ीदा है, दीन का मज़बूत सतून है। ये बात प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने "शाने अह्ले बैत عليهم السلام" में सिर्फ **20** (बीस) सालों में **180** से भी ज़्यादा किताबे लिखकर बता दिया है। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबों में सिर्फ और सिर्फ अह्ले सुन्नत की किताबों के हवाल पेश किये जो मस्लके अह्ले सुन्नत के **1400** साल के मुफ़स्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन, मुहक़्क़िक़ीन का इकट्ठा किया हुआ सरमाया है। **1400** साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकट्ठा करने का काम प्रोफेसर

ख़ुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं. प्रोफेसर साहब ने ख़ुद को अह्ले सुन्नत कहलाने वाले अह्ले हदीस और अह्ले देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबों के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा عليه السلام से मिलती है जिसे इस गुलाम ने अपने आँख़ों से देख़ी हैं। अल्लाह عز و جل उनके इस काम का बदला अता फ़रमाए और ब-रोजे क़यामत उनको, उनकी नस्लों को ख़ातमुन्नबी रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله के हाथो जामे कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

अल्लाह عز و جل से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله व अह्ले बैत عليهم السلام की शफाअत नसीब फ़रमाए !

ख़ादिमे दरे ज़हरा

डॉ. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी

13 रजब, हिजरी 1440

हज़रत अ़ली ؑ की हिकायतें

✯ उन्होंने चापलूसी/ख़ुशामद से इंकार किया ✯

एक बार एक शख़्स ने हज़रत अ़ली ؓ की बढ़ा चढ़ा कर तारीफ़ें कीं। हज़रत अ़ली ؓ ने फ़रमाया:

"मेरी चापलूसी मत करो। मैं वो नहीं जैसा तुमने कहा, लेकिन मैं उससे बहुत ज़्यादा हूँ जैसा तुम मेरे बारे में अपने दिल में सोच रहे हो।"

✯ उन्होंने प्रशंसा की निंदा की ✯

एक दिन हज़रत अ़ली ؓ ने एक दर्स दिया जो बहुत प्रभावशाली और पुरजोश था। किसी ने उनके दरस की तारीफ़ कर दी। उन्होंने उससे कहा:

"मेरी तारीफ़ मत करो। ये मुझे गुमराह करेगा और मुझे अहंकार के गुमान में रखेगा। याद रखो सारी तारीफ़ सिर्फ़ अल्लाह ﷻ के लिए है।"

✯ वोह अपना वज़न ख़ुद उठाते थे ✯

एक दिन हज़रत अ़ली ؓ ने बाज़ार से खाने-पीने का कुछ सामान ख़रीदा। सामान काफ़ी भारी था और वो उसे ख़ुद ही उठा कर ले जा रहे थे। बहुत सारे लोगों ने उस सामान को उठाने की बात कही। उन्होंने ये कह कर सभी को मना कर दिया कि हर इंसान को अपना बोझ ख़ुद उठाना चाहिए।

✯ वोह नहीं चाहते थे कि लोग उनके पीछे जुलूस की तरह चलें ✯

एक दिन हज़रत अ़ली ؓ घुड़सवारी कर रहे थे। कुछ लोग उनके साथ हो लिए और उनके नक्शे क़दम पर चलने लगे। उन्होंने उन लोगों से पूछा कि वो ऐसा क्यूँ कर रहे हैं। उन लोगों ने जवाब दिया कि उन्हें उनके पीछे पीछे चलने से ख़ुशी मिल रही है। "अपने काम पर वापस जाओ। ऐसा कर के तुम लोग अपने अंदर एहसास ए कमतरी पैदा कर रहे हो और मेरे अन्दर घमंड पैदा कर रहे हो।"

✯ उन्होंने तकलीफ़ सहने के लिए सब्र की दुआ माँगी ✯

जंगे उहद में हज़रत अ़ली ﷺ को सैंकड़ों ज़ख्म लगे। इन ज़ख्मों के बावजूद हज़रत अ़ली ﷺ ने लड़ाई जारी रखी और कहा:

“अल्लाह ﷻ मुझे इन ज़ख्मों को बर्दाश्त करने के लिए सब्र अता फ़रमाए। ये अल्लाह ﷻ की मेहरबानी है के उसने मुझे मैदाने जंग छोड़ने की जगह यहाँ टिके रहने और जंग लड़ने के हिम्मत अता की।”

✯ अपने लोगों के ख़िलाफ़ उनकी शिकायतें ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने एक रात पैग़म्बर ﷺ को ख्व़ाबमें देखा। उन्होंने पैग़म्बर ﷺ से ये शिकायत की कि उन्हें अपने लोगों से बहुत तकलीफ़ मिल रही है। पैग़म्बर ﷺ ने उनसे कहा कि वो उन लोगों पर अल्लाह ﷻ की लानत भेज सकते हैं। जब सुबह हुई, फज्र की नमाज़ के बाद उन्होंने अपने हाथ उठाए और कहा:

“ऐ अल्लाह ﷻ, मुझे इनसे अच्छे लोग अता फरमा और इन्हें मुझसे बुरा हाकिम अता फरमा।”

✯ उन्होंने घोड़े की जगह खच्चर की सवारी की ✯

जंग के लिए जाते वक़्त हज़रत अ़ली ﷺ घोड़े की जगह खच्चर की सवारी करते थे। उनसे पूछा गया कि वो घोड़े की जगह खच्चर को तरजीह क्यूँ देते हैं जबके घोड़ा ज़्यादा तेज़ ले जाएगा। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए है क्यूंकि वो मैदाने जंग से भागना नहीं चाहते।

✯ उन्होंने दुश्मनों को कभी पीठ नहीं दिखाई ✯

हज़रत अ़ली ﷺ हमेशा अपने बदन के अगले हिस्से पर बख्तरबंद(कवच) पहनते थे। उनसे पूछा गया कि वो पीठ पर बख्तरबंद क्यूँ नहीं पहनते। उन्होंने कहा ऐसा इसलिए क्यूंकि वो दुश्मनों को पीठ नहीं दिखाना चाहते।

✯ उन्होंने कभी रिआयत/छूट नहीं माँगी ✯

एक बार हज़रत अ़ली ﷺ अपने और अपने गुलाम के लिए कपड़े ख़रीदने बाज़ार गए वो एक दुकान पर गए और दुकानदार ने उन्हें पहचान कर कपड़े पर रिआयत देना चाहा। हज़रत अ़ली ﷺ ने कपड़े खरीदने से मना कर दिया।

✯ वो अपने गुलाम को ख़ुद पर फ़ौक़ीयत देते थे ✯

एक बार हज़रत अ़ली ﷺ अपने और गुलाम के लिए कपड़े ख़रीदने बाज़ार गए। एक कपड़े की क़ीमत ज़्यादा थी दुसरे की क़ीमत उससे कम थी। उन्होंने महंगा कपड़ा अपने गुलाम को दिया और कम वाला अपने लिए रखा।

✯ उन्हें ख़लीफ़ा बनने की कोई ख़्वाहिश नहीं थी ✯

ये कहा जाता है कि बसरा की तरफ़ जाते हुए, हज़रत अ़ली ﷺ और उनकी फ़ौज रब्दा के मक़ाम पर आराम कर रही थी जब इब्न अब्बास ﷺ उनसे मुलाक़ात के लिए आए। उस वक़्त हज़रत अ़ली ﷺ अपने जूते की मरम्मत कर रहे थे। हज़रत अ़ली ﷺ ने इब्न अब्बास ﷺ से पूछा कि जूते की क्या क़ीमत होगी। इब्न अब्बास ﷺ ने कहा कि पुराने जूते की बड़ी मुश्किल से कोई क़ीमत लगती है और इसकी क़ीमत ज़्यादा से ज़्यादा एक दिरहम के चौथे भाग जितनी होगी। हज़रत अ़ली ﷺ ने इस पर उसी वक़्त ये कहा," अल्लाह ﷻ की क़सम इस जूते की क़ीमत मेरे लिए ख़िलाफ़त से ज्यादा है। मुझे हुकूमत करने की कोई ख़्वाहिश नहीं।"

✯ जिस गुलाम ने उनके बुलाने पर जवाब नहीं दिया उन्होंने उसे आज़ाद कर दिया ✯

एक बार हज़रत अ़ली ﷺ ने अपने गुलाम को बुलाया, लेकिन उसने उनके बुलाने पर कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने ने उसे तीन बार बुलाया,

लेकिन गुलाम ख़ामोश रहा। तब वो गुलाम के पास गए और उससे कहा, "क्या तुमने मेरी आवाज़ सुनी थी ?" उसने कहा के उसने उनकी आवाज़ सुनी थी, लेकिन उस वक़्त वो अल्लाह ﷻ को आवाज़ दे रहा था जिसने उसे गुलामी की ज़िल्लत के लिए चुना।" उसके बाद हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा, "मैं तुम्हें अल्लाह ﷻ के नाम पर इसी वक़्त गुलामी से आज़ाद करता हूँ।"

✯ उन्होंने अपनी रूहानी आँखों से अल्लाह ﷻ को देखा ✯

एक बार हज़रत अ़ली ﷺ से पूछा गया कि क्या उन्होंने अल्लाह ﷻ को देखा है। उन्होंने कहा के उन्होंने सच में अल्लाह ﷻ को देखा है क्यूंकि वो उसे जाने बिना उसकी ईबादत नहीं कर सकते थे। उनसे पूछा गया के उन्हो ने अल्लाह ﷻ को कैसे देखा है ? फिर हज़रत अ़ली ﷺ ने जवाब दिया उन्होंने अल्लाह ﷻ को अपनी दिलकी रुहानी आंखो से देखा है।

✯ वो ईबादत में लीन हो जाते थे ✯

एक बार हज़रत अ़ली ﷺ के पैरों में तीर लग गया था। तकलीफ़ की शिद्दतकी वजह से उसे निकाला नहीं जा सका। जब हज़रत अ़ली ﷺ नमाज़ के लिए खडे होते तो, वोह (मज़हबी ईबादत) (नमाज़) में इस तरह डूब गए थे कि हकीम ने उसी वक़्त तीर निकाल दिया, मगर हज़रत अ़ली ﷺ को दर्द का एहसास तक न हुआ।

✯ वो बुरों के साथ बुरा नहीं करते थे ✯

सिफ्फीन के मैदाने जंग में, हज़रत मुआविया की फ़ौज ने पानी की रसद पर क़ब्ज़ा कर लिया था, और वो हज़रत अ़ली ﷺ की फ़ौज को पानी लेने की इजाज़त नहीं दे रहे थे। जब हज़रत अ़ली ﷺ की फ़ौज दुश्मन की फ़ौज पर ग़ालिब आ गयी और पानी की रसद पर क़ब्ज़ा कर लिया, हज़रत अ़ली ﷺ को ये मश्वरा दिया गया के वो दुश्मनों को पानी देने से मना कर

दें। उन्होंने ये कह कर ये मश्वरा मानने से इनकार कर दिया के मैं बुरे लोगों के साथ बुरा नहीं करता, बल्कि इस्लाम के तरीक़े पर अमल करता हूँ।

✯ वो अपने लोगों को ख़ुद पर तरजीह देते थे ✯

सिफ्फीन में पानी की कमी होने पर उन्होंने अपनी प्यास बुझाने से ये कह कर मना कर दिया के पानी उनके लोगों को दिया जाए जो उनसे ज्यादा प्यासे हैं।

✯ दो ग़लत मिल कर एक सही नहीं हो सकता ✯

जब, सिफ्फीन की लड़ाई के बाद हज़रत मुआविया ﷺ ने पड़ोसी इलाक़े सीरिया पर बार बार हमले कर के वहां के लोगों को परेशान कर रखा था, हज़रत अ़ली ﷺ के सूबेदार, कामील बिन ज़ियाद ने ये मश्वरा दिया कि उन्हें सीरिया में प्रतिकारात्मक अभियान (बदलेकी मुहिम) की अगुआई के लिए इख़्तेयार दिया जाए। हज़रत अ़ली ﷺ ने इस मश्वरा को मानने से ये कह कर इंकार कर दिया कि, "दो ग़लत मिल कर एक सही नहीं हो सकता। हज़रत मुआविया ﷺ को ही मासूम लोगों को परेशान कर के ख़ुश होने दिया जाए। मैं इस तरह के उपाय पर अमल नहीं कर सकता।

✯ अगर कोई मेहमान नहीं आता तो वो उदास हो जाते ✯

एक दिन हज़रत अ़ली ﷺ बहुत उदास और मायूस थे। जब उनसे उनकी ग़ैरमामूली उदासी की वजह पूछी गई तब उन्होंने बताया कि उनके घर एक हफ़्ते से कोई मेहमान नहीं आया है इसीलिए वो मायूस हैं।

✯ वो मोटे (कठोर या सख़्त) कपड़े की पोशाक पहनते थे ✯

हज़रत अ़ली ﷺ हमेशा मोटे कपड़े की पोशाक पहनते थे। जब उनसे पूछा गया के एक मुल्क के रहनुमा होते हुए वो इतने बुरे कपड़े क्यों पहनते हैं, उन्होंने जवाब दिया कि मोटे कपड़े दिलों को नर्म करते हैं जबकि अच्छे कपड़े दिलों को सख़्त कर देते हैं।

✯ वो कम सामान के साथ सफ़र करना चाहते थे ✯

हज़रत अ़ली ﷺ के घर में रोज़मर्रा के इस्तेमाल के अस्बाब नहीं थे। जब उनसे पूछा गया के एक मुल्क के हकीम होते हुए भी उन्होंने खुद को इन सहूलियात से महरूम क्यों रखा है, उन्होंने कहा के, "ये ज़िन्दगी एक सफ़र है और सफ़र में हों तो कम से कम सामान रखना चाहिए। मैंने इस जगह के बाद की मंज़िल के लिए सामान महफ़ूज़ करा लिया है।"

✯ वो अल्लाह ﷻ की दुकान में सेंध नहीं लगाते थे ✯

एक बार हज़रत अ़ली ﷺ के एक भाई अक़ील ﷺ ने उनसे अपने बुरे हालात का ज़िक्र कर के उनसे कुछ मदद माँगी। हज़रत अ़ली ﷺ ने उससे कहा कि जब उन्हें बैतुल माल से मामूल के मुताबिक़ वज़ीफ़ा मिलेगा तब वो उसमें से उसे कुछ देंगे। इससे अक़ील ﷺ को तसल्ली नहीं हुई। इस पर हज़रत अ़ली ﷺ ने उससे कहा "तब तुम बाज़ार की दुकानों के ताले तोड़ लो।" अक़ील ﷺ ने कहा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं चोर बन जाऊँ" हज़रत अ़ली ﷺ ने जवाब दिया "तो तुम ये चाहते हो कि मैं अल्लाह ﷻ की दुकान का ताला तोड़ूँ और बैतुल माल के निगरान (संरक्षक) की जगह उसका लुटेरा बन जाऊँ।"

✯ वो मौत से नहीं डरते थे ✯

सिफ्फीन की जंग में हज़रत अ़ली ﷺ सीरियन फ़ौज की सामने की सफ़ (पंक्ति) में बिना किसी हिफ़ाज़ती असलह के घुस गए। उनके हमलावर उनकी तलवार की वार से एक के बाद एक गिरने लगे। उनके बेटे ईमाम हसन ﷺ ने उनकी खुद की हिफ़ाज़त से लापरवाई पर ऐतराज़ किया तो हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा, "मेरे लिए ये ग़ैरज़रूरी है के मैं मौत के लिए जाऊँ या मौत मेरे लिए आए। मुझे मौत से वैसी ही मुहब्बत है जैसी मुहब्बत एक गोद के बच्चे को माँ के दूध से होती है।"

✯ उन्हें लूट के माल की परवाह नहीं थी ✯

एक जंग में हज़रत अ़ली ﷺ ने एक मालदार अरब सरदार उमर बिन उक़बा को मौत के घाट उतार दिया, लेकिन अरब की रिवायत के ख़िलाफ़ उन्होंने उसके जिस्म को बिगाड़ा नहीं, और ना ही उनके क़ीमती बख़्तर पर क़ब्ज़ा किया। जब उनसे पूछा गया के उन्होंने ऐसा क्यूँ किया तो हज़रत अ़ली ﷺ ने जवाब दिया कि, "शेर जब अपनी मर्ज़ी से मैदाने जंग में उतरता है तो वो मारता है या मर जाता है। वो लूंट के माल की परवाह नहीं करता।"

✯ वो जो ज़मीन ख़रीदते थे उसमें मौजूद ख़ज़ाने पर अपना हक़ नहीं जमाते थे ✯

एक बार हज़रत अ़ली ﷺ ने मदीना में एक आदमी से ज़मीन ख़रीदी। जब ज़मीन को खोदा गया तो उसमें से एक खज़ाना निकला। हज़रत अ़ली ﷺ ने उसे लेने से इंकार कर दिया क्यूंकि अस्ली मालिक से ज़मीन ख़रीदते वक़्त उन्होंने उसका सौदा नहीं किया था। उन्होंने उसके असल मालिक को वो खज़ाना देना चाहा लेकिन उसने भी खज़ाना लेने से मना कर दिया। उसके बाद हज़रत अ़ली ﷺ ने सारा खज़ाना खैरात (दान) में बाँट दिया।

✯ एक मुसलमान की मौत के बाद वो उसका क़र्ज़ चुकाने की ज़िम्मेदारी ले लेते ✯

एक बार पैग़म्बर ﷺ एक मुसलमान के जनाज़े में शामिल हुए। जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने से पहले पैग़म्बर ﷺ ने पूछा के क्या मरने वाले को कोई क़र्ज़ चुकाना था। उन्हें बताया गया के मरने वाले को एक दीनार का क़र्ज़ चुकाना था। पैग़म्बर ﷺ ने फ़रमाया के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने से पहले किसी को उस मरे हुए मुसलमान का क़र्ज़ चुकाने की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए। वो हज़रत अ़ली ﷺ थे जिन्होंने आगे बढ़ कर उसका क़र्ज़ चुकाने की ज़िम्मेदारी ले ली।

✯ वो जिसे आज़ाद कर देते बाद में उसपर हुकुमत नहीं करते थे ✯

हज़रत मुआविया का चचेरा भाई मरवान, हज़रत अ़ली رضي الله عنه का बहुत बड़ा दुश्मन था। उसने हज़रत अ़ली رضي الله عنه की ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ बग़ावत में अहम किरदार निभाया था। वो बसरा की जमल की लड़ाई में बंदी बना लिया गया और जब हज़रत अ़ली رضي الله عنه के सामने लाया गया तो उसने रहम की भीख मांगी। हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने उसे बिना किसी शर्त आज़ाद कर दिया। उसके बाद मरवान ने उनके साथ वफ़ादारी करने की बात कही लेकिन हज़रत अली رضي الله عنه ने उससे कहा कि, "मुझे उसकी वफ़ादारी नहीं चाहिए। मैंने उसे अल्लाह عزوجل के लिए आज़ाद किया इसलिए नहीं कि उसे अपना वफ़ादार बनाऊँ।"

✯ वो ज्योतिष की भविष्यवाणी का यक़ीन नहीं करते थे ✯

जब वो नहरवाँ की लड़ाई में ख्वारजीयों के ख़िलाफ़ फ़ौज की अगुआई कर रहे थे, एक ज्योतिष ने उन्हें ये मश्वरा दिया कि अभी वक़्त सही नहीं है इसलिए अभी जंग के लिए ना निकलें। हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने ये बात मानने से ये कह कर मना कर दिया कि, "अनहोनी की ख़बर सिर्फ़ अल्लाह عزوجل को है। अल्लाह عزوجل के मामलात में मैं किसी और को हिस्सेदार नहीं बना सकता।"

✯ वो अपनी हिफ़ाज़त के लिए कोई एहतियात नहीं करते थे ✯

ज़िन्दगी के आख़री दिनों में, जब हज़रत अ़ली رضي الله عنه को उन पर होने वाले जानलेवा हमलों से बचने के लिए हिफ़ाज़ती कारवाई करने के लिए कहा जाता, तो वो कहते, "मेरा जिस्म अल्लाह عزوجل की हिफ़ाज़त में है, और कोई भी अल्लाह عزوجل की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मुझे नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। अगर अल्लाह عزوجل की मर्ज़ी मुझे शहीद करने में होगी, तो कोई भी हिफ़ाज़ती कारवाई काम नहीं आएगी।"

✯ लोग उनके हक़ में खड़े होते थे ✯

बसरा में किसी ने उनसे कहा कि वो ख़िलाफ़त के आरज़ूमंद थे। हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने कहा "मैं ख्वाहिशमंद नहीं हूँ, येह जो हुआ है कि लोग मेरे हक़ में खड़े हैं। हक़ के लिए कोशिश करना ख्वाहिशमंद होना नहीं होता।"

✯ आलिशान (विशाल) घर ✯

हज़रत अ़ली ﷺ बसरा में अपने एक साथी आ'ला बिन ज़ियाद के घर गए । उसने बहुत आलिशान घर बनाया था । हज़रत अ़ली ﷺ उसके बड़े घर की आलोचना की। उन्होंने कहा "आ'ला तुम्हें अल्लाह ﷻ की दुनिया में इतना बड़ा घर बना कर क्या हासिल हुआ । तुम्हें इस दुनिया के बाद की दुनिया के लिए अपना आलिशान घर बनाना चाहिए ।"

✯ 'सन्यास', इस्लाम का रास्ता नहीं ✯

हज़रत अ़ली ﷺ को ये शिकायत मिली कि उनका एक साथी असीम बिन ज़ियाद ﷺ रुहानी (धार्मिक) रियाज़त में इतना मसरुफ़ हो गया है कि उसने अपने बीवी बच्चों की जिम्मेदारियों को नज़रंदाज़ कर रहा और लापरवाही बरत रहा । हज़रत अ़ली ﷺ ने उसको डांट लगायी और कहा कि 'सन्यास', इस्लाम का रास्ता नहीं । उन्होंने उसे अल्लाह ﷻ के लिए और अपने लोगों के लिए ज़िम्मेदारियों के बीच संतुलन क़ायम करने के लिए कहा ।

✯ ख़ाने की दावत का एहतमाम ✯

जब हज़रत अ़ली ﷺ को ये बताया गया के उनके एक सूबेदारने बहुत बड़ी दावत का इंतेज़ाम किया है । उन्होंने उसे एक ख़त लिख़ा जिसमें अपनी नामंजूरी का इज़हार किया और कहा "ऐसी दावत करके तुम्हें क्या हासिल हुआ जिसमें अमीरों को शान के साथ ख़ाना ख़िलाएँ और ग़रीबों को भगा दिया जाए ।"

✯ वोह अपनी आख़री उम्र में भी पहले की तरह तलवार चला सकते थे ✯

हज़रत मुआविया को ख़त लिख़ते वक़्त अपने एक ख़त में उन्होंने उसे लिख़ा था "मैं अपनी उसी तलवार को जिससे मैंने तुम्हारे नाना, मामू और भाई का सिर काटा था, आज भी उसी ज़ोर के साथ चला सकता हूँ ।"

हज़रत अ़ली رضي الله عنه की उपमाएँ (निर्देश) (तश्बीहात)

✯ हज़रत अ़ली رضي الله عنه की तश्बीहात(उपमाएँ) ✯

किसी चीज़ को सही तश्बीहात के ज़रिए बयान करना हज़रत अ़ली رضي الله عنه की ख़ास ख़ूबी थी । हज़रत अ़ली رضي الله عنه को कोई भी बात कहने का बेहतरीन तरीक़ा मालूम था और वो बहुत ख़ूबसूरती से सच्चाई को दिलचस्प मिसालों के ज़रिए सुनने वालों के सामने पेश कर देते थे, ये बात हमें उनके ख़िताब और दर्स में मिलती हैं ।

✯ दुनिया ✯

उन्होंने दुनिया को एक साँप की तशबीह दी जिसका चमड़ा बाहर से बहुत नर्म होता है लेकिन अंदर से बहुत ज़हरीला होता है ।

✯ झूठ ✯

हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने फ़रमाया कि मोर के पंख की तरह झूठ बहुत ख़ूबसूरत दिखता है, लेकिन ये मोर के पैरों जितना बदसूरत होता है । झूठ के पैर नहीं होते जिसके सहारे वो खड़ा हो ।

✯ बेदीन / नास्तिक ✯

हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने बेदीनों की तश्बीह चमगादड़ से की है जो अँधेरा होने पर देख सकता है, लेकिन जो अँधा है और रौशनी में कुछ नहीं देख सकता ।

✯ जो लोग उनके बुलाने पर जवाब नहीं देते ✯

जब हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने ईराक़ के लोगों को हज़रत मुआविया के ख़िलाफ़ जंग के लिए आवाज़ लगाई, उन्होंने उनकी आवाज़ पर कोई जवाब नहीं दिया, उन्होंने उनसे कहा “तुमलोग एक हामला (गर्भवती) औरत की तरह हो, जो बच्चा पैदा करने की तकलीफ़ से गुज़र कर मरा हुआ बच्चा पैदा करती है ।”

☆ बसरा के लोग ☆

जब बसरा के लोगों ने उनके साथ वफ़ादारी की क़सम खाई, लेकिन बाद में उनके ख़िलाफ़ जंग करने का फ़ैसला किया, हज़रत अ़ली ﷻ ने कहा कि ये लोग पानी के क़रीब है लेकिन आसमान से दूर हैं ।

☆ दौर ए जहालत के लोग (अज्ञानता के समय के लोग) ☆

इस्लाम से पहले के समय के लोगों का हवाला देते हुए हज़रत अ़ली ﷻ ने फ़रमाया कि वो लोग उस अंडे के जैसे थे जो घोंसले में ही टूट गया ।

☆ कूफ़ा के लोग ☆

कूफ़ा के लोगों को ख़िताब (संबोधित) करते हुए हज़रत अ़ली ﷻ ने फ़रमाया, "जब मैंने तुम्हें जंग की दावत दी तब तुम्हारी आँखें ऐसे घूमने लगीं जैसे तुम मौत की तकलीफ़ से गुज़र रहे हो । तुम लोग उन ऊँटों के जैसे हो जिनका चरवाहा ग़ायब हो गया हो और उन्हें एक तरफ़ से इकट्ठा करो तो वो दूसरी तरफ़ बिखर जाते हैं ।"

☆ वो लोग जो दुनिया के पीछे भागते हैं ☆

जो लोग दुनिया के पीछे भागते हैं उनके बारे में हज़रत अ़ली ﷻ ने कहा "ये लोग जो दुनिया के पीछे भागते हैं जानवरों की तरह हैं जो एक दुसरे के ऊपर गिरते हैं, ताक़तवर कमज़ोर को दबाता है ।"

☆ वो लोग जो दुनिया से ठगे नहीं जाते ☆

वो लोग जो दुनिया से धोखा नहीं खाते, उनके लिए हज़रत अ़ली ﷻ ने फ़रमाया, "वो जिन्होंने दुनिया के फ़रेब को समझ लिया वो मौत से नहीं घबराते । वो उन लोगों जैसे होते हैं जो अकाल-पीड़ित इलाक़े से निकल कर समृद्ध (बहुतात) इलाक़े में जा बसते हैं ।

✯ हज़रत अ़ली ﷺ ने बनू उमय्या के ख़िलाफ़ शिकायत की ✯

हज़रत उस्मान ﷺ की ख़िलाफ़त के दौर में हज़रत अ़ली ﷺ को ये शिकायत थी कि उमय्या उनका हक़ मार रहे थे। उन्होंने ने फ़रमाया "बनू उमय्या मेरा जो हक़ है उसे इस तरह रोक़ लेते है जैसे उंटनी परवरिश करनेवाले उंटनी का दूध निकालते वक़्त, उंटनी के बछडे को दूध पीने से रोक लेते है।"

✯ ईबादतके ज़रिए गुनाहों से छुटकारा पाना ✯

एक ख़ुतबे में हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा कि, एक इंसान के गुनाह ईबादत से ऐसे झड़ जाते हैं जैसे पेड़ से पत्तियाँ।

✯ सफ़ाई और ईबादत ✯

एकदूसरे ख़ुतबे में हज़रत अ़ली ﷺ ने फ़रमाया "ईबादत पानी के गर्म झरने जैसी है जो आपके दरवाज़े पर बहती है और आपकी सफ़ाई का ज़रिया बनती है।"

✯ ख़ाने के बाद बचे हुए टुकड़े ✯

एक ख़ुतबे में हज़रत अ़ली ﷺ ने फ़रमाया कि दुनिया ने अपनी वजहें ढूँढ ली हैं और इसका कुछ भी नहीं बचा है सिवा ख़ाने के बाद के बचे हुए चंद टुकड़ों के।

✯ जो लोग उनके आवाज़ देने पर जवाब नहीं देते ✯

वो लोग जो उनके बुलाने पर जवाब नहीं देते थे उनके लिए हज़रत अ़ली ﷺ ने एक ख़ुतबे में फ़रमाया के वो लोग उस ऊँट जैसे हैं जो पेट दर्द से चीख़ता हुआ अपने झुंड से दुर भाग जाता है।

✯ लोगों के दिल ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने एक ख़ुतबे में ये दुआ माँगी के लोगों के दिल अल्लाह ﷻ की बातों पर ऐसे पिघल जाएँ जैसे पानी में नामक घुल जाता है।

✯ नादान लोग ✯

लोगों को ख़िताब करते हुए एक बार हज़रत अ़ली ﷺ ने नादान लोगों के बारे में फ़रमाया के ऐसे लोग बोझ से लादे हुए जानवर पर सवार होते हैं जिन्हें कुछ दिखाई नहीं देता। उन्होंने अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए कहा कि नादान लोग इस्लामकी हिदायात पर ऐसे अमल करते हैं जैसे हवा तिनकों को बिखेर देती है।

✯ सब्र और यक़ीन ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने फ़रमाया के सब्र और यक़ीन का रिश्ता बिलकुल वैसा ही है जैसा कि इंसान के मामले में सिर और जिस्म का है। कोई भी जिस्म सिर के बिना नहीं होता और सब्र के बिना यक़ीन नहीं हो सकता।

✯ बीमारियाँ और गुनाह ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा के बिमारियों से गुनाह कम हो जाते हैं जैसे पेड़ से पत्ते झड़ जाते हैं।

✯ नेक इंसान की मौत ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने नेक इंसान की मौत का मुकाबला अकाल पीड़ित जगह से खुशहाल जगह का सफ़र करने वाले लोगों से किया है।

✯ ज़िन्दगी के दिन ✯

हज़रत अ़ली ﷺ का यक़ीन था के ज़िन्दगी के दिन वैसे ही गुज़रते हैं जैसे आसमान में बादल।

✯ दुनिया से मुहब्बत ✯

हज़रत अ़ली ﷺ का कहना था के जिन्हें दुनिया से मुहब्बत है वो उस भौंकने वाले कुत्ते और जंगली जानवर जैसे होते हैं जो एक दूसरे पर हमला करते हैं और जो ताक़तवर होता है वो कमज़ोर को ख़त्म कर देता है।

✯ दुनिया के चक्कर में रहने वाले ✯

जो लोग दुनिया के चक्र में रहते हैं हज़रत अ़ली ﷺ ने उन लोगोंका मुक़ाबला उन ऊँटों से किया है जो क़ैद से आज़ाद हो जाते हैं और शरारत करते रहते हैं ।

✯ ख़ामोशी की ख़ूबियाँ ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने ख़ामोशी की ख़ूबी की वकालत करते हुए ये मिसाल दी कि पानी मशक में तभी जमा किया जा सकता है जब उसका मूंह बंद कर दिया जाए ।

✯ तालाब पर प्यासा ऊँट ✯

जब लोग उनके वफ़ादार बनने के लिए उनके इर्द गिर्द जमा होने लगे, हज़रत अ़ली ﷺ ने उन्हें उन ऊँटों जैसा बताया के जब वो रस्सियों से बंधे होते हैं तब अपनी प्यास बुझाने के लिए तालाब के पास इकट्ठा होते हैं ।

✯ गुनाहगार की तशबीह ✯

हज़रत अ़ली ﷺ का यक़ीन था कि गुनाहगार उस इंसान जैसा होता है जो ऐसे जानवर पर सवार है जिस पर उसका क़ाबू नहीं और जो उसे करारी चोट पहुँचाने के लिए बहुत तेज़ दौड़ रहा है ।

✯ बारिश की बूँदें ✯

हज़रत अ़ली ﷺ का मानना है कि अल्लाह ﷻ की हिदायतें बारिश की बूंदों की तरह उतरती हैं ।

✯ गर्मी के बादल ✯

हज़रत मुआविया की चुनौती क़बूल करने के लिए हज़रत अ़ली ﷺ की पुकार पर कूफ़ा के लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया। हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा कि वो ऐसे फौजी साथ में चाहते हैं जो लड़ने के लिए तैयार हों और जिनकी रफ़्तार गर्मी के बादलों जैसी हो ।

✯ बकरी और शेर ✯

कूफ़ा के लोगों को मुख़ातिब करते हुए हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप सच के रास्ते पर रहें, लेकिन इस रस्ते पर वैसे दौड़ें जैसे बकरी शेर की दहाड़ सुन कर भागती है।"

✯ पैर का काँटा काँटे से निकालना ✯

एक मौक़े पर हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा कि कूफ़ा के लोग उस आदमी जैसे हैं जिसने पैर का काँटा निकालने के लिए काँटा ही चुना।

✯ नमक के पानी का घोल ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने कूफ़ा के लोगों के लिए ये दुआ माँगी "ऐ अल्लाह ﷻ इनके दिलों को ऐसे पिघला दें जैसे पानी में नमक घुलता है।"

✯ पेड़ का हिलाना ✯

पैग़म्बर ﷺ के साथियोंकी नेकी का हवाला देते हुए हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा कि वो मौत के बाद की ज़िन्दगी के ज़िक्र से ऐसे काँप उठते थे जैसे तेज़ हवा चलने से पेड़ के पत्ते काँपते हैं।

✯ हामला औरत (गर्भवती महिला) से बच्चे को अलग करना ✯

कूफ़ा के लोगों को मुख़ातिब करते हुए हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा के वो भरोसे के लायक़ नहीं और वे उन्हें छोड़ देंगे, जैसे हामला औरत बच्चे की पैदाईश पर अपने पेट में पलने वाले बच्चे से अलग हो जाती है।

✯ पैग़म्बर ﷺ का कुम्बा (परिवार / अहले बैत) ✯

हज़रत अ़ली ﷺ ने कहा के पैग़म्बर ﷺ का कुम्बा तारों जैसा है जहाँ अगर एक तारा डूबता है तो दूसरा निकल आता है।

हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ के अक़्वाल (उक्तियाँ)

☆ उनके अक़्वाल (उक्तियाँ) ☆

हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ इल्म और अक्ल का मुजस्सिमा (अवतार) थे । हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ की बातों में से जो हिकमत भरी हैं और मसल की तरह हैं उनका दस्तावेज़ मौजूद है । उनमें से कुछ यहाँ नीचे दर्ज की गयी हैं:

(1) अल्लाह عزوجل से डरो तुम्हें किसी और से डर नहीं लगेगा ।

(2) अल्लाह عزوجل की मर्ज़ी से त्याग करना दिल के मर्ज़ का इलाज है ।

(3) अल्लाह عزوجل की बातें दिल की दावा है ।

(4) ऐसी ज़िन्दगी जियो कि की लोग तुम्हारी मौत पर अफ़सोस करें और ज़िन्दा रहो तो तुम्हारे साथ की ख़्वाहिश करें ।

(5) ज़िन्दगी के दिन बादलों की तरह गुज़र जाते हैं इसलिए जब तक जिंदा हो नेकियाँ करो ।

(6) तमाम बेवकूफ़ियों में सबसे बड़ी बेवकूफ़ी दुनिया से मुहब्बत है ।

(7) मौक़ा बहुत तेज़ी से चला जाता है लेकिन वापस बहुत धीरे आता है ।

(8) गर्व, डर और दु:ख मर्दों के लिए बुरे और औरतों के लिए अच्छे हैं ।

(9) सबसे ज्यादा ख़ुश वो है जिसे अल्लाह عزوجل ने अच्छी बीवी दी है ।

(10) वो जो ख़ुद को जानता है अल्लाह عزوجل को जानता है ।

(11) जन्नत के अलावा किसी चीज़ के लिए अपने ज़मीर को मत बेचो ।

(12) दिल की बीमारी जिस्म की बीमारी से ज्यादा ख़तरनाक है ।

(13) अपनी ख़्वाहिश से लड़ना सबसे बड़ी लड़ाई है ।

(14) तुममें सबसे मज़बूत वो है जिसने ख़ुद पर क़ाबू पा लिया ।

(15) दौलत और लालच तमाम बुराईयों की जड़ है ।

(16) ईमान के बग़ैर दौलत सबसे बड़ी ग़रीबी है ।

(17) एक इंसान की क़ीमत उसकी ख़्वाहिशों की नेकी से नापी जाती है।

(18) इल्म रुह में ज़िन्दगी डाल देता है।

(19) आलिम(ज्ञानी) मरने के बाद भी जिंदा रहता है।

(20) इल्म का मक़ाम सबसे आला है।

(21) आलिम(ज्ञानी) की इज़्ज़त अल्लाह ﷻ की इज़्ज़त है।

(22) दरियादिली कमियों पर पर्दा डाल देती है।

(23) कंजूस की दौलत पत्थर की तरह बेकार होती है।

(24) ख़्वाहिश सबसे बड़ी दुश्मन है।

(25) जो आज ज़मीन के ऊपर चल रहे हैं एक दिन इसके अन्दर दफ़न कर दिए जाएँगे।

(26) इंसान की हर साँस उसे मौत से क़रीब करती है।

(27) इंसान जब तक जिंदा है सोता है, मरने के बाद वो जाग जाता है।

(28) सब्र यक़ीन का फल है।

(29) नेकी कभी नहीं मरती।

(30) एक इंसान की नेकी उसके ख़ानदान से ज्यादा फ़ख़्र की बात है।

(31) परहेज़गारी से बड़ा आसरा कोई नहीं।

(32) किस इंसान का सुलूक उसके दिमाग की जानकारी देता है।

(33) मिलनसारी (खुशमिजाज़ी) से कोई नुकसान नहीं होता बल्कि फ़ायदा होता है।

(34) दया से ताक़त मिलती है।

(35) हसद नेकी को ऐसे जला देती है जैसे आग ईंधन को जला देती है।

(36) जिसने बुरा सुना वो बुरे के लायक़ है।

(37) माफ़ करना अज़मत की निशानी है।

(38) जिस्मानी भूख (शैतान) का फैलाया हुआ जाल है।

(39) सभी तीर निशाने पर नहीं लगते और ना ही सभी ईबादत क़बूल होती है।

(40) दिखावा ईबादत को बर्बाद कर देता है।

(41) अपने गुनाहों के अलावा किसी से ना डरो।

(42) वो जो तुम्हारी तारीफ़ करता है तुम्हारा क़त्ल करता है।

(43) जो इंसान ख़ुद अपनी तारीफ़ करता है वो अपने कम अक्ल होने का सबूत पेश करता है।

(44) अपने वालिदैन की इज़्ज़त करो तुम्हारी औलादें तुम्हारी इज़्ज़त करेंगी।

(45) एक इंसान की पहचान उसकी ज़बान से होती है।

(46) एक अक्लमंद इंसान की ज़बान उसके दिल में होती है।

(47) ज़बान का ज़ख़्म बरछी के ज़ख़्म से ज्यादा गहरा होता है।

(48) जिसने अपने दिल को साफ़ कर लिया वो ईमान वाला है।

(49) एक अक्लमंद इंसान की राय पेशनगोई होती है।

(50) सलाह माँगना रहनुमाई के चश्मे (झरने) पर जाने के जैसा है।

(51) बेवकूफ का साथ रूह पर ज़ुल्म करना है।

(52) अल्लाह ﷻ तानाशाह का ख़ात्मा बहुत जल्द करता है।

(53) तानाशाही हौसला कमज़ोर करती है।

(54) एक तानाशाह की जीत उसकी नैतिक हार है।

(55) भीख मांगने से अच्छा है मर जाना।

(56) जब इंसान भीख माँगता है वो अपना यकीन खो देता है।

(57) हज तमाम ईमानवालों का जिहाद है।

(58) बेवकूफ दोस्त से अक़लमंद दुश्मन बेहतर है।

(59) बेवकूफ के लिए सबसे अच्छा जवाब ख़ामोशी है।

(60) सबसे अच्छी तक़रीर वो है जो मुख़्तसर और माकूल हो।

(61) तक़रीर दवा की तरह होती है, जिसकी छोटी ख़ुराक इलाज है और ज्यादती मौत ।

(62) जिसे हिम्मत नहीं उसका कोई मज़हब नहीं ।

(63) जिसकी उम्मीदें कम होती हैं उसकी तकलीफ़ें ज्यादा होती हैं ।

(64) बोलने की आज़ादी का हक़ सच बोलने में है ।

(65) पछतावा गुनाहों को धो देता है ।

(66) बेवकूफ़ी लाईलाज बीमारी है ।

(67) ग़लत का साथ देना सही पर ज़ुल्म करने जैसा है ।

(68) गुनाह करना बीमारी है, पछतावा इसका इलाज है और इससे परहेज़ मुकम्मल इलाज है ।

(69) दु:ख इंसान को वक़्त से पहले बूढा कर देता है ।

(70) घमंड कामयाबी और अज़मत में रुकावट डालता है ।

(71) माफ़ करना अज़मत की निशानी है ।

(72) वो जो इंसानियत को समझता है वो तन्हाई की तलाश करता है ।

(73) सही होना सबसे अच्छी दलील है ।

(74) ग़लतबयानी बात को बर्बाद कर देती है ।

(75) जैसे जैसे इंसान की अक्ल में इज़ाफ़ा होता है उसके बोलने की ख़्वाहिश कम होती जाती है ।

(76) जो लोगों के साथ इंसाफ़ करना चाहता है, उसे उनके लिए वही मुराद माँगनी चाहिए जो वो अपने लिए माँगता है ।

(77) सबसे बड़ा गुनाह वो है जिसे गुनाहगार छोटा समझता है ।

(78) इत्मिनान वो ख़ज़ाना है जो कभी कम नहीं होती ।

(79) हुकुमत इंसान के लिए एक आज़माइश है ।

(80) जो सच के ख़िलाफ़ लड़ाई करता है सच उसे शिकस्त देगा ।

(81) दूसरों में बुराई तलाश करना सबसे बड़ी बुराई है ।

(82) जल्दी पागलपन की एक क़िस्म है ।

(83) लालच मुसलसल गुलामी है ।

(84) जो अपनी क़ीमत नहीं जानते उनके नसीब में बर्बादी लिखी होती है ।

(85) सबसे अच्छा निवेश (सरमायाकारी) वो है जिसके साथ फ़राइज़ पूरे किये गए हों ।

(86) गुस्सा आग से भरा होता है,जिसने गुस्से पर क़ाबू पा लिया उसने आग पर क़ाबू पा लिया, जिसने उसे हवा दी वो उस आग का शिकार हो जाता है ।

(87) जिहाद ख़ुशहाली का बड़ा रास्ता है ।

(88) कंजूस से ज़्यादा अकेला कोई नहीं ।

(89) इल्म अमीरों का जेवर और ग़रीबों की दौलत है ।

(90) इल्म बरतरी का आख़िरी मक़ाम है ।

(91) जो आपको एक हर्फ़(शब्द) भी सिखाता है आपको अपने एहसान में बाँध लेता है ।

(92) जब तक हम उम्मीदें नहीं करते हम मायूस नहीं होते ।

(93) जो लोग मज़ाक़ और घटिया बातें करते हैं उनकी अक़्ल कम हो जाती है ।

(94) सच कड़वा होता है लेकिन इसका नतीजा मीठा होता है, झूठ देखने में बहुत मीठा लगता है लेकिन इसका असर ज़हरीला होता है ।

(95) कंजूसी बहुत सारी बुराईयों की जड़ है ।

(96) इल्म और अमल जुड़वां हैं और दोनों साथ रहती हैं, अमल के बिना इल्म नहीं और इल्म के बिना अमल नहीं ।

(97) जिसने ढोंग किया उसने अपनी इज़्ज़त से खेला ।

(98) जब अल्लाह ﷻ किसी इंसान को बेईज़्ज़त करना चाहता है वो उसे इल्म से महरुम कर देता है ।

(99) जब तुम्हारी ताक़त बढती है तुम्हारी ख़्वाहिशें उसी हिसाब से कम होती जाती हैं ।

(100) जो चुगलखोर की सुनता है वो दोस्त खो देता है ।

(101) सिर्फ़ अन्दाज़ों की बुनियाद पर किसी मुक़दमे का फ़ैसला सुनाना इन्साफ नहीं ।

(102) जो अपनी ख़ूबियों को नहीं जानता, उसे नादान समझा जाता है ।

(103) जिसने किफायत पर अमल किया उसे मांगना नहीं पड़ता ।

(104) जो (इल्म) नहीं जानता उसे सीखने में शर्म नहीं करनी चाहिए ।

(105) ईमान के लिए सब्र वैसे ही है जैसे जिस्म के लिए सिर, जब सब्र ख़त्म होता है ईमान चला जाता है, जब सिर चला जाता है जिस्म चला जाता है ।

(106) अल्लाह ﷻ की मेहरबानी सबसे बड़ी रहनुमा है ।

(107) ख़ुशमिजाजी सबसे अच्छा साथी है ।

(108) अक़्लमंदी सबसे अच्छी दोस्त है ।

(109) अच्छी परवरिश सबसे अच्छा सरमाया है ।

(110) घमंड से ज़्यादा क़ाबिल ए नफ़रत कुछ नहीं ।

(111) मर्दों के बीच वैसे ही रहो जिस तरह मक्खी फूलों में रहती है ।

(112) लोगों के साथ अपनी ज़बान से मेल बढाओ लेकिन अपने काम से उनसे अलग दिखो ।

(113) दरियादिल बनो लेकिन ख़र्चीले नहीं ।

(114) दुनिया के पीछे मत भागो दुनिया को अपने पीछे भागने दो ।

(115) अक्लमंद इंसान वो है जो अल्लाह ﷻ के ईनाम और रहम से मायूस नहीं होता ।

(116) जो अपनी गलतियों से आगाह है वो औरों की गलतियों से अनजान है।

(117) जो आँखें देखती हैं उसे दिल महफ़ूज़ कर लेता है।

(118) आँखों से देखने की हद होती है लेकिन दिल की नज़र वक़्त और जगह की हदों से परे होती है।

(119) दिखावे से गुमराह ना हो क्यूंकि ये भटकाव पैदा करते हैं।

(120) आग में ज्यादा लोहा मत डालो, एक वक़्त में एक ही चीज़ पर ध्यान दो।

(121) औरों के लिए भी वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो।

(122) इत्मिनान वो धरोहर है जो कम नहीं होता।

(123) बूढ़े आदमी की सलाह जवान इंसान की बहादुरी से कीमती है।

(124) वो इल्म बेकार है जो सिर्फ़ ज़बान पर हो, वो इल्म सच्चा है जो आपके अमल में दिखाई देती है।

(125) वक़्त की बर्बादी किसी का सबसे बड़ा नुकसान होता है।

(126) जो अपना राज़ छुपा कर रखना जानता है वो कामयाबी का रास्ता जानता है।

(127) दूरअंदेशी हिफ़ाज़त का रास्ता है।

(128) अल्लाह ﷻ और इंसान के रिश्ते से बड़ा कोई रिश्ता नहीं।

(129) ईबादत से अपने दिल को रौशन करो।

(130) अपने दिल को ईमान से मज़बूत करो।

(131) हवस को मज़हबियत से दबा दो।

(132) दुनिया के लिए आख़िरत को मत बेचो।

(133) बेख़बरी में मत बोलो।

(134) बेकार की बातों से बचो।

(135) उस रास्ते पर मत चलो जिसपर गुमराह होने का ख़तरा हो।

(136) अल्लाह ﷻ के मामलात में बुराई का कारोबार करने वालों से मत डरो।

(137) तुम जो भी कम करो उसमें अल्लाह ﷻ की हिफ़ाज़त तलाश करो।

(138) जो अनचाहा है उसे मत छुपाओ।

(139) अगर तुम्हें सच की तलाश है तो सही रास्ते से मत भटको, या शक में मत पदों।

(140) अपनी ख़्वाहिशों के गुलाम मत बनो।

(141) जिस दौलत से बदनामी हासिल हो वो दौलत बेकार है।

(142) ख़ामोशी से जो भी ज़ख्म मिले उसका इलाज हो सकता है लेकिन बातों से जो तकलीफ़ पहुँचती है उसका कोई इलाज नहीं।

(143) दूसरों के सामने हाथ फैलाने से अच्छा है अपनी ख़्वाहिशों पर रोक लगाना।

(144) ईमानदारी की मेहनत से हुई कम कमाई बेईमानी से कमाई गयी बड़ी रक़म से बेहतर है।

(145) अपने राज़ की हिफ़ाज़त अच्छी तरह करो।

(146) जो ज़रुरत से ज्यादा की ख़्वाहिश करता है वो ग़लत कामों में फँस जाता है।

(147) ग़रीबोंको दबाना सबसे बड़ा ज़ुल्म है।

(148) झूठी उम्मीदों पर जमा मत करो क्यूंकि वो मरने वाले की पूँजी होगी।

(149) एक अक़लमंद इंसान छोटी सी भूल से भी सबक़ हासिल करता है।

(150) सब्र और यक़ीन से ख़्वाहिशों और शक पर क़ाबू पा लो।

(151) जो बीच का रास्ता नहीं अपनाता वो भटक जाता है।

(152) जिसका कोई दोस्त नहीं वो अजनबी है।

(153) जब उम्मीदें हार जाती हैं तब नाउम्मीदी ज़िन्दगी का तरीका बन जाती है।

(154) जिसने दुनिया का यकीन किया दुनिया उसे धोखा देती है।